B.A. Part - I

डॉ. अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज, आरा

द्रुत झरो पात (पंत)

प्रश्न : कवि पंत की कविता 'द्रुत झरो पत्र' का भावार्थ प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर : 'द्रुत झरो पत्र' कवि सुमित्रा नंदन पंत की प्रगतिवादी कविताओं में से एक है। कवि प्रगतिवादी समाज की ओर मे कदम बढ़ाना चाहता है, वह जड़ समाज का समर्थक नहीं है। जो जीर्ण-शीर्ण हैं, ऐसे अतीत का नष्ट हो जाना ही समाज कल्याण के लिए अच्छा है। विश्व-वृक्ष के पुराने मुरझाये हुए, प्राणहीन पत्तों के झड़ जाने के बाद ही जग-उपवन का कल्याण होगा। जब तक ये पुराने, प्राणहीन पत्ते झड़ नहीं जाते तब तक नए जीवन के पत्ते नहीं खिलेंगे। कवि ऐसे पत्तों को देखना नहीं चाहता, जो सर्दी-गर्मी को न सह सकने के कारण पीले-पड़ गए हैं जो बसंती बहार से डरते हैं। कवि संकेत स्वर में कहता है - 'तुम संसार से विरक्त जान पड़ते हो, तुममें चेतना नहीं रह गयी है, तुम बिल्कुल पुराने पड़ गए हो। ऐसे पत्तों की कोई उपयोगिता नहीं रह गयी है। तुम्हारे झड़ जाने के बाद ही नए पत्ते निकलेंगे।

कवि जड़ समाज की जगह चेतन समाज को देखना चाहता है वह ऐसे प्राणी को चाहता है जो हिम-ताप को, संकटों को झेल सके। वे नवीन का स्वागत करना चाहते हैं। वे कहते हैं - "जीवन के प्रति उदास न हों, जिन्हें जीवन में अनुरक्ति हो, प्रगति में विश्वास हो वहीं मेरे साथ चलें।' हमारा समाज रूढ़-परंपराओं और बेड़ियों में जकड़ा हुआ है, उसमें गति नहीं है, जीवन का कोई चिह्न नहीं है, वह म्रियमाण हो गया है। इस मरे हुए पत्तों के समान है। विगत युग का निष्प्राण हो गया है। इस सड़े और

P.T.O

मरे हुए भूत के शव को हमें घर से बाहर निकाल फेंकना है। हे अतीत रूपी पक्षी! तुम्हारे पँख बिखर चुके हैं। जगत के घोंसले में तुम्हारा शब्द मुखरित नहीं होता, तुम्हारे प्राणों की गति सुनाई नहीं पड़ती। तुम्हारे पँखों का सदा के लिए अनंत काल में विलीन हो जाना ही ठीक है।

कवि कामना करता है कि फिर जग के शरीर में नये खून की लाली आये, नवीन माँस की सजीवता आए। जग के उपवन में नए अरुण पल्लव खिलें, प्राणों का स्वर मुखरित हो और नवजीवन की हरियाली छाये। विश्व-वृक्ष फिर से हरा-भरा हो जाए, उसमें यौवन का पिक गुंजन करें। वह प्रेम की काकली सुनाए, प्रेम के स्वर की मदिरा से नव युग का प्याला भर उठे। यह तभी संभव होगा जब विश्व के आम्रवृक्ष के पीले पत्ते, मुरझाए पत्ते झड़ जाएँ, नए पत्ते निकल आएँ, और कोंपलों पर बौर लगे। उन बौरों पर तरुण पक्षी कूजन करें। कोयल की कूक में प्रेम का एक नया नशा होता है। नवयुग की प्याली इस प्रेम की मदिरा से भर जाएँ। कवि जग में ऐसे ही भोर की कल्पना करता है, जहाँ सभी लोग सुखी हों और आनंद से जीवन बितायें।

U.G. Hindi (Hons)
B.A. Part I
'Drut Jharo paat'.